भूमिका ।

हृद्बोधितश्वेतकपारदायै
महागमाम्भोनिधिपारदायै ।
बुद्धिप्रदानैकविशारदायै
कुर्वे नमः प्राञ्जलि शारदायै ॥ १ ॥

धन्य है उस परब्रह्म परमात्माको जिसके परिपूर्ण कृपाकटाक्षसे हमको वह सुअवसर प्राप्त हुआ कि जिस में चतुर्विध श्रीसंघ-समुदायने बड़े आग्रह के साथ सुयोग्य मुनिराजश्रीभ्रातृचन्द्र-सूरिजीको प्राचीन रीति के अनुसार सूरिपद प्रदान की चेष्टा की। उस अपनी चेष्टा को परिपूर्ण करनेके लिये सब जैन-महाशयोंकी सुलभता विचारकर गुजरात और मारवाड़ के मध्यवर्ती श्रीसिरोहीराज्यान्तर्गत श्रीशिवगञ्जनगरमें महोत्सव किया, उस महोत्सव पर मैं भी श्रीसंघसमुदायसे साग्रह आमन्त्रित किया गया, शिवगंज में उक्त सूरीश्वरजी की सेवामें पहुंचा। उस समय सूरीश्वरजीमहाराज के अपूर्व गुणोंको, और आए हुए सब महाशयोंकी परिपूर्ण भक्ति और परमोत्साह देखकर यह प्रशस्ति मैंने बनाई है आशा है कि सब महाशय पक्षपातको छोड़कर इस पर कृपादृष्टिका प्रसारकर मेरे श्रमको सफल करेंगे।

यदि किसी महाशय को इसमें शङ्कास्पद विषय प्राप्त होवेतो मेरे से निम्न लिखित पते पर पत्रव्यवहार कर सक्ते हैं. इतिशम्.

ज्ये. कृ. १३ सं. १९६८
चाँदपावड़ी,
जोधपुर.

इति निवेदयति विद्वदनुचरः
पं. नित्यानन्दशास्त्री
आशुकविः

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

आबु तीर्थ पासे शीवगंज नगरे.

॥ श्लोक. ॥

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्री कोटीकाख्येगणे ॥
श्रीमचंद्रकुले वटोरुबृहद्गच्छे परिम्लायिते ॥
श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतपा प्रासावदातेधुना ॥
स्फूर्ज दूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥१॥

आचार्यश्री संविग्न पक्षीय मुनिमहाराज श्री १००८

श्री आत्मचंद्र सूरीश्वर विजय राज्ये.

श्री
श्री आ श्री
श्री आ त्म आ श्री
श्री आ त्म चं त्म आ श्री
श्री आ त्म चं द्र चं त्म आ श्री
श्री आ त्म चं द्र सू द्र चं त्म आ श्री
श्री आ त्म चं द्र सू री सू द्र चं त्म आ श्री
श्री आ त्म चं द्र सू री श्व री सू द्र चं त्म आ श्री
श्री आ त्म चं द्र सू री श्व र श्व री सू द्र चं त्म आ श्री
श्री आ त्म चं द्र सू री श्व र स र श्व री सू द्र चं त्म आ श्री

जन्म संवत १९२०. क्रिया उद्धार संवत १९३७.
दीक्षा संवत १९३५. सूरीश्वरपद संवत १९६७ना
वैशाख शुद १३.

अथ श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर महाराजनो

संवत् १६१२ मां स्वर्गवास. तत्पट्टेथी पट्टावलिका लिख्यते.

॥ मालिनी छंद ॥

विदित सकलशास्त्रान् पार्श्वचंद्रान् कवींद्रान् ॥
भजत समरचंद्रान् मध्यराजीव सूर्यान् ॥
नमत विशदमूर्तीन् रामचंद्रान्मुनींद्रान् ॥
विमल विमल चंद्रान् नौमि सुरींद्रमुख्यान् ॥ १ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

पूज्याश्रीजयचंद्रसूरिमुनिपा, जाता जगद्विश्रुता ।
स्तत्पट्टोदयभास्करा गणिवराः श्रीपद्मचंद्रा बभूः ॥
तत्पट्टे मुनिचंद्रसूरि गणिनो, नंदंतु भट्टारका ।
स्तत्पट्टाब्जविभाकरा गणिवरा श्री नेमिचंद्राह्वयाः ॥ २ ॥
तत्पट्टे कनकेंदुसूरि गणपा, जाता जगत्युत्तमा ।
स्तत्पट्टे शिवचंद्रसूरि मुनिपा, विख्यातकीर्ति व्रजाः ॥
तत्पट्टे विपुलप्रबोधमहिताः श्री भानुचंद्राभिधा ।
स्तत्पट्टे च विवेकचंद्रयतिपा जाता जगत्पूजिताः ॥ ३ ॥

॥ वसंततिलका छंद ॥

तत्पट्टे मानस सरोवर राजहंसाः
श्री लब्धिचंद्र मुनिपाः मदभूरुहेभम्
तत्पट्टभास्कर निभा विमलद्गुणौघाः
श्री हर्षचंद्रमुनिपुंगवरा जयंतु ॥ ४ ॥
॥ तत्पट्टे श्री हर्षचंद्र सूरीश्वरः

तत्पट्टे ज । पृ । प । म ।

॥ आचार्य श्रीमान भ्रातृचंद्र सूरीश्वर विजयंतेतराम ॥ ५ ।

श्रीजैनश्वेताम्बरधर्मोपदेशकप्रभावकाचार्यादिगुणोपेतमुनिराज
श्री श्री श्री १००८



आचार्य श्रीमान श्रीलालचन्द्रजी ... व कच्छनिवासी
... महात्मा

अथ श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर महाराजनो

संवत् १६१२ मां स्वर्गवास. तत्पट्टेथी पट्टावलिका लिख्यते.

॥ मालिनी छंद ॥

विदित सकलशास्त्रान् पार्श्वचंद्रान् कवींद्रान् ॥
भजत समरचंद्रान् मव्यराजीव सूर्यान् ॥
नमत विशदमूर्तीन् राजचंद्रान्मुनींद्रान् ॥
विमल विमल चंद्रान् नौमि सूरींद्रमुख्यान् ॥ १ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

पूज्याश्रीजयचंद्रसूरिमुनिपा, जाता जगद्विश्रुता ।
स्तत्पट्टोदयभास्करा गणिवराः श्रीपद्मचंद्रा बभूः ॥
तत्पट्टे मुनिचंद्रसूरि गणिनो, नंदंतु भट्टारका ।
स्तत्पट्टाब्जविभाकरा गणिवरा श्री नेमिचंद्राह्वयाः ॥ २ ॥
तत्पट्टे कनकेंदुसूरि गणपा, जाता जगत्युज्वला ।
स्तत्पट्टे शिवचंद्रसूरि मुनिपा, विख्यातकीर्ति व्रजाः ॥
तत्पट्टे विमलप्रबोधसहिताः श्री भानुचंद्राभिधा ।
स्तत्पट्टे च विवेकचंद्रयतिपा जाता जगत्पूजिताः ॥ ३ ॥

॥ वसंततिलका छंद ॥

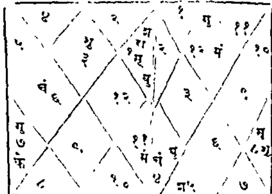
तत्पट्टे मानस सरोवर राजहंसाः
श्री लब्धिचंद्र मुनिपाः प्रबभूवुरेवम्
तत्पट्टभास्कर निभा विलसद्गुणौघाः
श्री हर्षचंद्रमुनिचन्द्रवरा जयंतु ॥ ४ ॥
॥ तत्पट्टे श्री हर्मचंद्र सूरीश्वरः
तत्पट्टे जं । मु । म । भ ।

॥ आचार्य श्रीमान् भ्रातृचंद्र सूरीश्वर विजयतेतराम् ॥

जैनशासनप्रभावक धर्ममूलव्यवहारशुद्धिधारक मा-
र्गानुसारी गुणग्राहक, जिनाज्ञामुकुटधारक सकल
श्री संघ जैन हठीशींग शरस्वती सभा शामळानी
पोळ बालगोपालप्रति विदित करवामां आवे छे
के श्रीमन्नागपुरीय बृहत्तपागच्छाधिराज श्री पार्श्व-
चंद्रसूरि संतानीय सुशीलादि गुणसंपन्न जगत् प्र-
सिद्ध जगतशेठ गुरु श्री १००८ जंगम जुग प्रधान
भट्टारकोत्तमभट्टारक श्री हेमचन्द्रसूरि श्रीमुखें
अत्यन्त आग्रह पूर्वक श्री संघप्रति जणाव्युं के जै-
नशासन उन्नतिकारक सन्मार्गोपदेशक तेमज गी-
तार्थ अने वयसंपन्न धीर वीर शमशील संवेगादि-
गुणगण शोभित सुविहित शिरोमणी धर्मधुंधर,
मुनिराज श्री १००८ आर्यभानुचंद्रजी महाराजने
योग्य जाणी में सूरिपद आप्युं छे अने ते आचा-
र्यपदनो महोत्सव करी आपने लाभ लेवो जोइये.
वळी तेओश्रीये चोमासुं [illegible] ज्ञान अनशनना माटे
प्रवर पंन्यास श्री १००८ मुनिराजश्री शांतिविजयजी-
गणि महाराज [illegible] उक्त पदनी
क्रिया करावनुं [illegible] ने पंन्यासजीये प्र-
[illegible] पदना महोत्सवमां लाभ

लेनार सुश्रावक समधर गुर्जर कच्छदेशनिवासी भाईयोने आववामां अनुकूल जिल्हा सीरोइ एर-नपुर स्टेशन पासे शिवगंज शहेर पसंद कर्युं अने सुविधदनुं मुहूर्त संवत् १९६७ ना वैशाख शुक्ल द्वादशी उपर त्रयोदशी बुधवार शुभ लग्नना

॥ समयोष्ट लग्न ॥ ॥ नवांश कुंडली ॥



समयमां निधार्युं छे,ने उपर श्री संघ आनंददायक आ मंगलिक महोच्छवनां प्रसंगे जरूर पधारी अमारा मनोरथ सफल करशो, तेमज पंचतीर्थी यात्रानो लाभ पण अति उत्तम आवा प्रसंगे सानुकूल थशे, वली अट्ठाइमहोच्छवादि अक्षयतृतीयाथी प्रारभ थनार छे.

लि. शिवगंजथी श्री संघना चरणकमलोपासक नगरशेठ कल्याणजी सींघजीभाइ तथा शा. दीपचंद

सरस्वती सा मम चित्तरङ्गेऽ-

रं गेयमारभ्य नटीव नृत्यात् ॥ १ ॥

वाहन हंससे युक्त, हंसके जैसे गमन करनेमें चतुर, ऐसी वह सरस्वती नटीके जैसे अपने हाथमें अपनी (कच्छपीनामक) वीणाको लेकर गानको प्रारंभ कर मेरे चित्तरूप नाटक घरमें जलदी नृत्य करे ॥ २ ॥

पूर्णप्रसादेन हि यस्य नित्यं

महोन्नतिं प्राप्य [1]जडाशयोऽपि ।

सज्ज्ञानरत्नाकरतां दधाति

पादान्नुमस्तस्य गुरोर्विधोर्वा ॥ २ ॥

जिसकी परिपूर्ण कृपासे जडाशय मूर्खभी नित्य बड़ी उन्नति को प्राप्तहोकर अच्छे ज्ञान रूप रत्नोंके खजाने बनजाते हैं, ऐसे चन्द्रमा जैसे गुरु के चरणों की हम स्तुति करते हैं। चन्द्रमा भी (जलाशय) समुद्रको अपनी निर्मलता से उल्लास को प्राप्तकर रत्नाकर बनादेता है, इससेही गुरुका चन्द्रमाके साथ सादृश्य बतलाया है ॥ ३ ॥

---

१ डलयोरैक्याज्जलाशयोऽपि ॥

* आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिराजाष्टकम् ।

मुक्तावलीप्रविलसद्धृदयो नितान्तं
सन्तन्त्रमन्त्रपरिशीलनसंगतात्मा ।
राजेव सत्प्रमददो मुनिराज एष
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥१॥

मुक्ति पाये हुए, तीर्थंकर आदि महात्माओंको हृदय में धारण करते हुए, आगमसिद्धान्त और नवकारादि मन्त्रोंके स्मरणमें तत्पर, सज्जनोंको हर्ष देने वाले राजाके जैसे यह मुनिराज आचार्यश्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी यहां शोभित होते रहो ॥ १ ॥

निध्यानसुस्मरणवाक्श्रवणे हि यस्य
प्रीणन्ति दृग्हृदयकर्णपुटान्मनुष्याः ।
शान्तः स संमितवचः कथनाभिलाषी
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥२॥

[illegible] दर्शन करनेसे नेत्रोंको और

मनुष्य जिन (मुनिराज) के दर्शन

* [illegible] प्रथमाक्षरैः "मुनिभ्रातृचन्द्रसूरि" [illegible] पहले अक्षरोंसे [illegible] नाम निकलता । इस अष्टकमें प्रत्येक श्लोकके पहले अक्षरोंसे [illegible] यह नाम निकलता है इसी लिये ये अक्षर [illegible] ॥ और इस अष्टकमें वसन्ततिलका छन्द है ॥ [illegible]

* मुक्तावली [illegible] पाई । मुक्तावलीहार [illegible] [illegible] तु [illegible] ।

* [illegible] मन्त्र [illegible] आचारोंका [illegible] ॥

स्मरण करनेसे हृदयको, और वाणीके श्रवण करनेसे कर्णोंको एकदम तृप्त करते हैं, वे शान्त, परिमित वचनको कहना चाहने वाले मुनिराज आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजी यहां शोभित रहो ॥ २ ॥

आजिष्णुजिष्णुमुकुटावलिबिम्बिताङ्घ्रिं
तीर्थेश्वरं निजमनोमुकुरे दधानः ।
संधारितोत्तमशमो दमभूषितात्मा
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः॥३॥

जिनके चरण चौसठ महेन्द्रोंके मुकुटोंमें प्रतिबिंबित होगये थे, उन जिनराजको अपने हृदय रूप दर्पणमें धारण करते हुए, शम और दमसे भूषित श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी यहां शोभित रहो ॥३॥

तृष्णामपि प्रतिविमुच्य यदीयभक्ता--
स्तृप्ता भवन्ति वचनामृतपानतो नो।
जैनागमाम्बुनिधिमन्थनमन्दरः स
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः॥४॥

जिनके भक्तोंके तृष्णाको छोड़कर भी वचनामृत [illegible] पान करनेसे तृप्त नहीं होते । यह आश्चर्यकी बात है [illegible] तृष्णा (प्यास) छोड़ने [illegible] [illegible] तृष्णा [illegible] नहीं होते

[illegible]

[illegible]

जैनशास्त्र रूप समुद्रके मथन करनेमें मन्दराचलके जैसे वे श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज शोभित होवो ॥ ४ ॥

चन्द्रो यदीयमुखचन्द्रवचोऽमृतौघ-
वर्षं विलोक्य हि सुधास्रवणच्छलेन।
अश्रूणि वर्षतितरां नितरां स साधुः
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥५॥

चन्द्रमा जिन (मुनिराज) के मुखरूप चन्द्रमाके वचनरूप अमृतकी वृष्टि देखकर अमृत वर्षनेके छलसे मानो निरंतर आंसूही वर्षाता है, वह मुनि श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी यहां शोभित रहो। भावार्थ यह है कि यह चन्द्रमा अमृत नहीं वर्षाता है किंतु इन मुनिराजके मुखचन्द्रकी वचनरूप अमृतवृष्टि देख आंसु वर्षा रहा है ॥ ५ ॥

द्रप्सं पयोन्विति ससंभ्रममेव गोपै-
र्मुक्ताविवृष्टिरिति मुग्धतराङ्गनाभिः।
देवैः सुधेति विदितं खलु यद्यशः स
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥६॥

जिन (मुनिराज) के यशको गोपाओंने दही या दूध समझा, और मुग्ध स्त्रियोंने मोतियोंका ढेर समझा; और देवोंने अमृत समझा। अर्थात् अपने [illegible] अपना [illegible] प्रिय समझा जिनके

मनको वश किया वे मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्र सूरीश शोभित रहो ॥ ६ ॥

मुनेऽर्पितराज्यमनूनं यस्तु गौर्गीर्गा
येनोपयोगमयतं कवितारुचिरिक् ।
मच्छ्रीगुरुप्रवरपादसरोजभृङ्गः
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥

जिन (मुनिराज) की वाणीरूप गौ उस अर्थ मर्म धनको उत्पन्न करती है, जिससे कवितारूप मेरी मनकामना प्राप्त होवे, वे गुरुमहाराजके चरणकमलमें भ्रमररूप आचार्य श्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी शोभित रहो ॥ ७ ॥

रिक्थं त्यजन्नपि विराजति सार्थको यो
मानं जहच्च परिराजति यः समानः ।
श्रीमान्स तत्त्वसुगवेषणदत्तचेताः
श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥८॥

जो कि मुनिराज धनको छोडते हुए भी सार्थक (अर्थ-धनसे सहित) हैं । और मानको छोडते हुएभी समान (मान सहित) हैं । यह आश्चर्य है । वास्तवमें धनको छोडकर सार्थक (सफलता सहित) हैं ही, और मानको छोडकर मान-पूजा (आदर) सहित हैं ही, वे मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी यहां (हृदयमें) शोभित रहो ॥ ८ ॥

---

१ गीर्वाणी धेनुश्च ।

प्रथमाक्षरसुव्यक्ततदाख्यमिदमुत्तमम् ।
अष्टकं सूरिराजस्य नित्यानन्देन निर्मितम् ॥१॥

प्रथम अक्षरोंमे उनके (मुनि भ्रातृचन्द्रसूरि) नामको प्रकट करने वाला यह सूरिराजाष्टक नित्यानन्दने बनाया ॥ १ ॥

अथश्रीसुविहित शिरोमणी आचार्य

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिहृदयाष्टकम् ।

अनुष्टुप् छन्दः ।

मुखाम्बुजसमुत्पन्न-शास्त्रसारमधुं मुनिम् ।
श्रीभ्रातचन्द्रसूरीन्द्रं वन्दे नन्दथुदायकम् ॥१॥

मुखरूप कमलसे शास्त्रोंके साररूप मकरंद उत्पन्न करनेवाले, मुनिराज, आनन्ददायक श्रीभ्रातृचन्द्र सुरीश्वरजीको मैं प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥

उपजातिवृत्तम् ।

सुबुद्धिमन्तं मनसा सुशान्तं
जिनेश्वराज्ञाः स्वधियाऽनुयान्तम् ।
जना भजध्वं सुगुणैः समेतं
श्रीभ्रातचन्द्रं किल सूरिमेनम् ॥ १ ॥

अच्छे बुद्धिमान, मनमें शान्त, अपनी बुद्धिसे जिनेश्वरोंकी

१ आचार्यपदलाभन बुद्धिमत्वाद् वृत्तानां चतुरतानां क्रमेण कृतया गुरुपदकर्मित नाम सार्थकम् ।

आज्ञाको अनुसरण करते हुए, सद्गुणोंसे युक्त ऐसे इन श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीको हे लोको ! तुम सेवो ॥ २ ॥

इन्द्रवंशावृत्तम् ।

सूरिं कृतस्वामिपदाभिवन्दनं
स्वीयाङ्गभासंजितचारुचन्दनम् ।
सद्देशनाभिर्जनचित्तरञ्जनं
श्रीभ्रातृचन्द्रं स्तुहि दुःखभञ्जनम् ॥३॥

अपने प्रभु (तीर्थंकरों) के पाद वन्दना करने वाले, अपने अंगकी कान्तिसे चन्दनको जीतनेवाले, अच्छी व्याख्यान वाणीसे लोकोंके चित्तको खुश करने वाले, दुःखको नाश करने वाले श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजकी हे पुरुष ! तू स्तुति कर ॥ ३ ॥

प्रहर्षिणीवृत्तम् ।

संशुद्धं श्रुतनिवहेषु सुप्रबुद्धं
निर्दोषं विरहितकाममानरोषम् ।
निष्कामं शुभमनिदं गुणाभिरामं
भ्रात्रिन्दुं नमत रुचा जयन्तमिन्दुम् ॥४॥

शुद्ध, शास्त्र समयमें सुप्रवीण, दोष रहित, काम, मान और क्रोधको त्याग करने वाले, इच्छा रहित अथवा पृथ्वीको देने वाले, गुणाभि मनोहर, कान्तिसे चन्द्रमाको जीतने वाले आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीको तुम नमो ॥ [illegible] ।

वसन्ततिलकं वृत्तम् ।

सत्यार्थसंमननपूर्णरुचिं सुदान्तं
सद्धर्मचारणपरं परसौख्यहेतुम् ।
संसारसागरसुतारणकर्मलग्नं
श्रीभ्रातृचन्द्रमवगच्छत सूरिराजम् ॥५॥

सत्य अर्थके माननेमें पूर्ण रुचिवाले, जितेन्द्रिय, अच्छे धर्मके चलानेमें तत्पर, दूसरेके सुखके कारण, संसार समुद्रके तारणमें लगे हुए श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वर महाराजको ऐसे जानो ॥ ५ ॥

मालिनीवृत्तम् ।

कुशलसलिलवर्षाम्भोधरं धैर्यवन्तं
दुरितदलनमार्गं सत्वरं सूचयन्तम्
जिनपतिपदपद्मोपासनादत्तचित्तं
निजहृदि कलयामो भ्रातृचन्द्रं हि सूरिम् ॥६॥

कुशलरूप जलकी वृष्टि करनेमें मेघरूप, धैर्यवान, पापके नाश करनेके मार्गको जल्दी बतलाते हुए, जिनराजके चरणकमलकी सेवामें एकाग्रचित्त, ऐसे श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीको हम अपने हृदयमें धारण करते है ॥ ६ ॥

मन्दाक्रान्तावृत्तम् ।

देशे देशे मुकुलकृनये संचरन्तं महान्तं
काले काले जिनपदयुगं संस्मरन्तं नितान्तम् ।

लोके लोके शुभकृतिफलार्थोपदेशान्दिशन्तं
सूरिं वन्दे हृदि परिगतं भ्रातृचन्द्रं शुभं तद्[illegible]

देश देशमें शुभ कर्मके लिये भ्रमण करते हुए, घर, ग्राम [illegible]
में जिनागमके परमपदका स्मरण करते हुए, मोक्ष [illegible] प्रति
[illegible] कर्मोंका उपदेश देते हुए, हृदयमें रहे हुए उन श्री
जिनागम भ्रातृचन्द्रसूरिमहाराजको मैं वन्दन करता हूं ॥ ७ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।

[illegible] षडेन्द्रियग्रामकं
[illegible] सत्पथप्रभावकम् ।
[illegible] शास्त्राङ्कं वा प्रियं
[illegible]

आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिपट्कम् ।

रथोद्धताच्छन्दः

शीतकान्तिसमकान्तिकायकं
तीर्थनाथगुणवृन्दगायकम् ॥
शास्त्रतत्त्वकणिकाविचायकं
भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥१॥

क्रोधमानमदलोभजायकं
मोक्षमार्गऋजुताप्रणायकम् ।
तारणादिवहुसौख्यदायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥२॥

वोधिवोधनविधाविधायकं
देशनामृतरसप्रपायकम् ।
ज्ञानमुख्यवररत्नभायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥३॥

आत्मवाक्यगतवर्णमायकं
सुप्रशस्तजिनमार्गयायकम् ।

१ अस्मिन्पट्के [illegible] वायक [illegible] वायक जायक [illegible] प्रतायत ।
[illegible]

लोके लोके शुभकृतिफलार्थोपदेशान्दिशन्तं
सूरिं वन्दे हृदि परिगतं भ्रातृचन्द्रं शुभं तम् ॥७॥

देश देशमें शुभ कर्मके लिये भ्रमण करते हुए, बड़े, काल २ में जिनराजके चरणकमलका स्मरण करते हुए, लोक २ में अच्छे लाभदायक कर्मोंका उपदेश देते हुए, हृदयमें रहे हुए उन श्रीमुनिराज भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीको मैं वन्दन करताहूं ॥ ७ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।

सारासारविचारचारणरतं वश्येन्द्रियग्रामकं
सिद्धान्तागममर्मवेदिनममुं सत्यप्रियाभाषणम् ।
सम्यक्त्वोत्तममार्गसूचनपरं साक्षाद्गुरुं वा स्थितं
श्रीमन्तं धृतचारुसूरिपदकं श्रीभ्रातृचन्द्रं भजे ॥८॥

सार और असारके विचार करनेमें तत्पर, जितेन्द्रिय, सिद्धान्त और आगमोंके मर्मको जानने वाले, सत्य और प्रिय बोलने वाले, सम्यक्त्वके उत्तम मार्गको बतलाने वाले, सूरिपदको धारन करने वाले साक्षात् बृहस्पतिके जैसे इन श्रीमान् मुनि महाराजश्री भ्रातृचन्द्रजीको सेवन करताहूं ॥ ८ ॥

आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य सूरेर्वृद्धयष्टकं शुभम् ।
धर्मवृद्धिप्रदं नृणां नित्यानन्देन निर्मितम् ॥९॥

मनुष्योंको धर्मकी वृद्धि देने वाला आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका यह वृद्ध्यष्टक नित्यानन्दने बनाया ॥ ९ ॥

आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिपट्कम् ।

रथोद्धताच्छन्दः

शीतकान्तिसमकान्तिकायकं
तीर्थनाथगुणवृन्दगायकम् ॥
शास्त्रतत्त्वकणिकाविचायकं
भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥१॥

क्रोधमानमदलोभजायकं
मोक्षमार्गऋजुताप्रणायकम् ।
तारणादिबहुसौख्यदायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥२॥

बोधिबोधनविधाविधायकं
देशनामृतरसप्रपायकम् ।
ज्ञानमुख्यवररत्नभायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥३॥

आत्मवाक्यगनवर्णमायकं
सुप्रशस्तजिनमार्गयायकम् ।

१ अस्मिन्पद्ये [illegible] नायक [illegible] नायक जायक [illegible] इति [illegible]

२ [illegible]

दर्शनाऽतुलितमोदरायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥४॥
सर्वशास्त्रगुभसारलायकं
स्वीयसद्गुरुसुकीर्तिनायकम् ।
शान्तिचारुशयनाधिशायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥५॥
अर्थसद्विपयवाग्विपायकं ।
दान्तिवीर्यजितपञ्चसायकम् ।
वर्जनीयसमदोपहायकं
भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम्

भाषा टीका—चन्द्रमाके समान शरीर कान्ति वाले, समस्त जिनेश्वरोंके गुणसमूहको गाने वाले, शास्त्रके तत्त्वकणको ढूंढने वाले ऐसे श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका (हे मित्र!) तू शरण ले ॥१॥

क्रोध, मान, मद, और लोभ इनको जीतने वाले, मोक्ष मार्गको सरल बनाने वाले, तारण आदि बहुत गुणके देने वाले ऐसे श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका शरण ले ॥ २ ॥

---

१ सं.पातात्पुंष्टि करम् ।
२ [illegible] गतुलि करम् । विनयकरेण दर्शनमितिपाठः ।
३ [illegible]

सम्यक्त्व जनानेके प्रकारको बतलाने वाले, देशना रूप अमृत रसको पाने वाले, ज्ञान आदि रत्नोंसे शोभित होने वाले ऐसे भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका शरण ले ॥ ३ ॥

अपने वाक्यके अक्षरोंका परिमाण करने वाले अर्थात् परिमाणके वचनको कहने वाले, अच्छे जिनेन्द्रके मार्गमें चलने वाले, दर्शनके अपूर्व आनन्दको देने वाले ऐसे श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका शरण ले ॥ ४ ॥

सब शास्त्रोंके अच्छे २ सारको ग्रहण करने वाले, अपने गुरुकी कीर्तिको फैलाने वाले, शान्ति रूप अच्छी शय्या पर सोने वाले ऐसे भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजका तू शरण ले ॥ ५ ॥

अर्थ और अच्छे विषयकी वाणीको विशदरूपसे बतलाने वाले, इन्द्रिय दमनके प्रभावसे कामदेवको जीतने वाले, वर्जने लायक सब दोषोंको त्याग करने वाले ऐसे मुनि महाराज आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका (हे मित्र) तू शरण ले ॥ ७ ॥

नित्यानन्देन रचितां श्रीसंघमुखपङ्कजे ।
श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीशन्द्रपद्मं षट्पदतामितान् ॥ १ ॥

यह नित्यानन्दका बनाया हुआ आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरपद्म, श्रीसंघके मुख कमलमें भ्रमर पनेको प्राप्त होवो, अर्थात् मुख पर निवास करो ॥ १ ॥

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीपट्पदी ।

" व्रजराज आज साँवरो वंशी बजा गयो "

इत्यनेन रागेण गीयते ।

श्रीभ्रातृचन्द्र सूरिराजमर्थदायकं ।
भजस्व हे सखे गुरुं विरागिनायकम् ॥ टेर ॥
संसारमेतमुज्झितुं समीहसे यदा ।
मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा ॥ १ ॥
श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥
प्रवेशमीहसे यदा धियो निवेशने ।
तदा मनःप्रसारये ममोपदेशने॥श्रीभ्रातृचन्द्र०॥२
करालकाल एष संनिधौ समागतः ।
किमीक्षसे विनश्वरं फलं हि रागतः ॥
श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ३ ॥
विहाय कर्म शास्त्रमर्म धर्मकर्मणे ।
ग्रहीतुमीहसे यदा तदा सुशर्मणे ॥
श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीराजवंशदीपकं ।
सुमुक्तिराजधानिकाध्वनः समीपकम् ॥
श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ५ ॥

---

१ समीपवर्तिनि समीपकम्नं मुक्तिराजधान्याः सामान्यदर्श०

तपः प्रकर्षनिर्जितोरुरञ्चसायकं ।
महानिदेशनासुधारसप्रपायकम् ॥
श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ६ ॥

नित्यानन्देन रचिता भाईलालेन गापिता ।
आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य पदपद्मास्तां मुखाम्बुजे ॥ १ ॥

भाषाटीका । हे मित्र ! वाञ्छित अर्थको देनेवाले, गुरु मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्र सूरिराज महाराजको सेवन कर ॥ टेर ॥

जोकि तु इस संसारको छोडना चाहता है, और जो मुक्तिको जाना चाहता है तो हर्षसे हे मित्र ! वांछित अर्थको देनेवाले ॥१॥

तू बुद्धिके घरमें जो प्रवेशको चाहता है तो मेरे उपदेशमें मन फैला । हे मित्र० ॥ २ ॥

यह भयंकर काल पासमेंही आया हुवा है, रागसे क्या अनित्य सुखको देख रहा है । हे मित्र० ॥ ३ ॥

जोकि तू (सांसारिक) कर्मको छोडकर धर्म करनेके लिये शास्त्रके मर्मको लेना चाहता है तो मुक्तिके लिये । हे मित्र०॥४॥

(श्रीबृहत्तपागच्छीय) श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरजीके वंशके दीपक, मुक्तिरूप राजधानीके मार्गको समीप करनेवाले । हे मित्र० ॥ ५ ॥

तपके प्रकर्षसे कामको जीतने वाले, व्याख्यानरूप अमृतरसके पानेवाले । हे मित्र वांछित अर्थको देनेवाले गुरु मुनिराज आचार्य श्रीभ्रातचन्द्रजी सूरिराज महाराजको सेवन कर ॥ ६ ॥

नित्यानन्दशर्मासे बनाई गई, और 'भाईलालजीसे गा
गइ आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजीकी पट्टपदी सुन्दर
पर रहो ॥ १ ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीभ्रातृचन्द्राभ्युदयम् ॥

सहृदयमण्डली । (सहर्षोद्गारपूर्वैः)

एष द्विजाधिपतितां मुकुलोऽनुभूय
भट्टारकाधिपपदं रुचिरं दधानः ।
सूर्यासनं धरति हन्त करप्रसार-
व्यक्तप्रभुनः सुबुधयोगमवाप्य चन्द्रः ॥१॥

(इति पुनः पुनः पठति)

आरतमण्डली । [निशम्य] किं भणति भवती, किं
[illegible] भवति ? अहो अत्र [illegible]
[illegible]

[illegible]

श्रावकमण्डली। भो एतैः पद्यैरेव्सुमर्थं ध्वनपति भवती नर्वह निस्सीमानन्ददानेन परमकृपाक्षीना भरिष्यामि।

सहृदयमण्डली। शृणु सावधानम्।

एष हि मुनिशिरोमणिः—

श्रीमत्पर्वतनायकार्बुदगिरिप्रान्तप्रदेशस्थित-
वड्ग्रामनिवासिनो गुणिवरादौदीच्यविप्रात्सतः।
जन्म प्रापदसौ स्वमातृ-विजयाकुक्षौ सुपुण्ये दिने
भाईचन्द इति प्रथांच धृतवांश्चन्द्रोपमाङ्ग द्युतेः॥२॥

इति द्विजकुलोत्पन्नत्वाद् "द्विजाधिपनितामनुभूय" इति प्रस्तुतम्। अयंच गार्हस्थ्ये दानृभोक्ता कल्याणमल्लो वाऽऽसीदतः "मुक्तमल" इत्युक्तम्।

अपिच—

मुक्त्यध्वचन्द्राद्गणिमुक्तिचन्द्रतो
दीक्षां च विश्रामधृतायमुन्मनाः।
श्रीमण्डलाचार्य-विरागिमौलिना
योगेन पश्चात्कुशलेन्दुनोद्धृतः॥३॥

[1]अत एव सगलम्यालाग्रकाणां मुनीनामधिपस्य पदमिति व्यस्तम्।

[illegible]—

[illegible]ना [illegible]निज [illegible] -[illegible] [illegible]ज नो [illegible]यम्।

[illegible] इत्यमर। सुप्तु पर्वेन्त [illegible]
[illegible] इति [illegible] मुनयद

प्रकटीकुरुते मुक्ति-पदवीमदवीयसीम् ॥४॥

अत एवोक्तं करमसार व्यकाग्रन इति ।

किञ्च—

श्रीमज्जगच्छेष्ठिगुरुव्रतीन्द्र-
श्रीहेमचन्द्राऽऽग्रहयोगमाप्य ।
तद्योग्यकर्मा कथमप्यनिच्छं-
श्चिरादसौ सूरिपदं दधाति ॥५॥

अतः सुयुधयोगमवाप्य सूर्यासनं दधातीत्युपश्लोकितम् । अतः सत्यमेवोक्तम्—

" एष द्विजाधिपतितां " इत्यादि पुनः पठति ।

श्रावकमण्डली । [आकर्ण्य] आर्ये ! सहृदयमण्डलि ! वन्दे भवतीम्, कृतार्थीकृताऽस्मि भवत्यै तेन गुरुवरोच्चपदवीनामिरूपपरम हर्षोद्गतश्रावणेन । किं बहुना, आत्मवशीकरणेनाऽपि नाऽहं भवत्या अनृणीभावं माप्तुं क्षमे । इति [मुहुर्मुहुः पादयोः पतति]

सहृदयमण्डली । किमितः परं स्पृहणीयम्, तथाप्याशासे-

अज्ञानध्वान्तराशि-प्रविदलनपटुः सद्विवेकप्रकाश-
संचारासमशंसो मृदुतरवचनापूर्वपीयूषवर्षी ।
नक्षत्रैर्वा स्वशिष्यैः महचरगविधिनाममंपूर्णदा ध्ये-
श्चन्द्रो वा भ्रातृचन्द्रो जनकुमुदगणं बोधयन्नन्वि-
राज्यात् ॥६॥ इति ॥

१ नांनदूरक ग्राम

दाधिचेनाशुकविना नित्यानन्देन शास्त्रिणा ।
भ्रातृचन्द्रोदयं नाम खण्डनाख्यं प्रदर्शितम् ॥१॥

इतिश्री योधपुरस्थ दाधीच-कासल्योपाख्य-पं. नित्यानन्द शास्त्रिकृ
श्रीभ्रातृचन्द्राभ्युदयं नाम खण्डनाटकं[1] समाप्तम् ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

अथश्रीजैनाचार्यसद्गुरुश्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वर स्तुतिः[2]।

अनुष्टुप् छन्दः ।

श्रीमद्बृहत्तपागच्छे स्वच्छे नागपुरीयके ।
त्यागवैराग्यसंपन्नान्सूरीन्बुधविधून्भजे ॥ १ ॥
श्रीचतुर्विधसंघेन दत्तं प्राचीनरीतितः ।
जैनाचार्यपदं येभ्यस्तान्स्तुवे हर्षतो गुरून् ॥ २ ॥
अलौकिकगुणग्रामा-भिरामान्सूरिपुंगवान् ।
आचार्यभ्रातृचन्द्राख्यान्वन्देऽहं ज्ञानवृद्धये ॥ ३ ॥
औदार्य-धैर्य-गाम्भीर्य-शम-शीलगुणान्वितान् ।
युगप्रधानसूरीन्द्रानुरागेणार्च्यपदाम्बुजान् ॥ ४ ॥

१ [illegible] केवल सहृदयजनश्रमसंकल्पात्र हिन्दीभाषा टीका ना ।
२ [illegible] योग्यता [illegible] परादि परिवर्तनं कृतम्. [illegible] ॥

येषां वागमृतासारैः स्पूर्णश्रवणान्नगः ।
जायन्ते हर्षसंपन्ना भव्यलोका नमामि तान् ॥ ५ ॥
पण्डितानां कवीनाञ्च पूज्यान्गुणवतो गुरून् ।
बाह्याभ्यन्तरसंपत्ति-सनः सेवे प्रमोदतः ॥ ६ ॥
कषायमुक्तान्योगीशान्सदाचारस्वपालकान् ।
भवाब्धितारणे पोतान्हृदि ध्यायामि सद्गुरून् ॥ ७ ॥
पैशुन्यवञ्चनद्वेष-मोहद्रोहविवर्जितान् ।
षट्त्रिंशत्सुगुणोपेतानाचार्यान्संस्मराम्यहम् ॥ ८ ॥
इतिश्रीभ्रातृचन्द्राख्य-सूरिराजस्तुतिं हि ये ।
पठन्ति शुद्धभावेनाऽ-जस्रं लक्ष्मीं भजन्ति ते ॥ ९ ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छ-गगनाङ्गनभोमणि मुनिशिरोमणि-युगप्रधान-जैनाचार्यश्री १००८ श्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वराणां स्तुतिस्तच्छिष्येण मुनिसागरचन्द्रेण रचिता समाप्ता ।

स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

॥ ॐ ऐं श्रीं ह्रीं नमः ॥

गीतिः

[1]सद्गुणहेमपरीक्षा-निकषः श्रीशिवगंज संघोऽयम् ।

---

१ अस्यां रचनायां योग्यतयाऽस्माभिः पदादिपरिवर्तनं कृतम्. पं. नि. शा. ।

जजीयतां स सकलः श्रीभ्रात्रिन्द्वोः कृपार्द्रदृक्प्रान्तैः॥१॥

मालिनी

प्रथितपरमबोधेनाऽत्र संवीक्ष्य सूरि-
पदममवितनं श्रीभ्रातृचन्द्रे मुनीन्द्रे ।
वितनशमदमाद्यैः सद्गुणैः शोभमाने
जलनिधि-(१) विधसंघो दत्तवान्सार्थकं तत्॥२॥

उपजातिवृत्तम् ।

मुनीन्द्रवृन्देडितपादपद्म-मुर्वीतले सद्गुणरत्नसद्म ।
वाचाद्भुताचाऽऽहृतमोक्षपद्मं भ्रात्रिन्दुमाचार्यपदस्थमीडे॥३॥
श्रितान्विशेषो ह्यरिनिद्विपातु सदा सुधामोदरदेशनाभिः ।
सुधां महर्षे भुवि पाययन्तं भ्रात्रिन्दुमाचार्यपदस्थमीडे ।४।
विकारजालं क्षिपतीमतर्पां दयादृगन्तैकसुधाभिवर्षाम् ।
मूर्तिं सुलावण्यमयीं दधानं भ्रात्रिन्दुमाचार्य० ॥ ५ ॥
कृपावत्रांशेषभेददर्शनैर्गम्नपक्ष सुक्तैकदक्षैः ॥
न्यक्षान सुशिष्यान्प्रतिबोधयन्तं भ्रात्रिन्दुमाचार्य०॥६॥
विद्वज्जनस्वान्तसरोमरालं मोहान्धकारप्रविध्वंसविवेकजालम् ।
तर्कोत्मितार्थैकसुवर्णशाटं भ्रात्रिन्दुमाचार्य० ॥ ७ ॥
न्यायालनारोपगजाननोपं ज्ञानैककोपं सुनिरस्तदोषम् ।

१ मनुजान् ।

सद्वृत्तवृत्तवनदोषमोषं श्रीजिनेन्दुमाचार्य० ॥ ८ ॥
पुण्येगिनामुत्तममुक्तिगमां स्वध्यानसंपूरितसर्वकामान्
मंत्रीश्वरन्तं हृदयाभिगमां श्रीजिनेन्दुमाचार्य० ॥ ९ ॥
नागिरम्यं सुरैकगम्यं समस्तलोकोज्झितनारतम्य
युगप्रधानं च युगेऽत्र रम्यं श्रीजिनेन्दुमाचार्य० ॥१०॥
इत्यष्टकं पुण्यात्मचितं श्रीदीपचन्द्रमुनिपस्य ।
ग्रामे दुर्गापुरे ह विहितनवाष्टकेन मयका वै ॥११॥
सदानन्द महोत्साहाः-शिराशीः कुसुमाञ्जलिः ।
समागता मुदे स्यात उमाशङ्करशास्त्रिणः ॥१२॥

पद्यचार्ये इत्यत ।

मुनिश्रुतादम् (१९८१) मिताब्दिकेऽत्र माघि मास
[illegible] तृतीयादिने [illegible] ।
[illegible] गुरुदत्त [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥

[illegible]

[illegible] ॥

॥ श्रीगुरुषट्पदी ॥

" भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते "
इति रागेण गीयते ।

नर गुरुचरणं नर गुरुचरणं नर गुरुचरणं कुरु शरणम्,
प्राप्ते काले महति कराले नहि नहि रक्षति संसरणम् ॥
नर गुरु० ॥ टेर ॥

बाल्येऽधीतं किमपि न शास्त्रं वयसि नवे त्वां घ्नति मदनास्त्रम् ।
जहति जरायामपि निजसूता[1] अन्ते व्यथयन्त्यह यमदूताः॥
नर गुरु० ॥ १ ॥

नहि गुरुवर्जं भवति विवेकः सूर्यमृतेऽन्धं रयति[2] भुवने कः।
ज्ञानमृते नो भवति हि मुक्ति-स्तन्मन्तव्या मपदि मदुक्तिः॥
नर गुरु० ॥ २ ॥

ज्ञानमृते नहि नागनागं वेमि कुरु त्वं मनसि विचारम् ।
नदनवोधाक्रमणमनेकं यामि ननस्त्वं कुरु गुरुमेकम् ॥
नर गुरु० ॥ ३ ॥

इच्छसि चेत्त्वं परपदमेतुं नत्तु भजादि गुरुमिह हेतुम् ।
नियं मौग्यं रदनु त्रिसार्थं हेतुम् न नहि सिद्ध्यति कार्यम्॥
नर गुरु० ॥ ४ ॥

[1] स्वपुत्रा [2] नाशयति

येन क्रियते सरलः पन्था–स्तद्द्वारायुः सुपदा ग्रन्थाः ।
सोऽक्षरमेकं गुरुरिह दत्ते सिद्ध्यत्यक्षरमेव हि तत्त्वे ॥

नर गुरु० ॥ ५ ॥

सेवन्ते नो य इह तमेनं ते सेवन्तेऽनि यमनिकेतनम् ।
नित्यानन्दो यदभिमतस्ते तद्वाग्माध्यं कुरु निजमस्ते ॥

नर गुरु नरगं ॥ ६ ॥

नित्यानन्देन रचिता बुधमल्लेन गायिता ।
इयं गुरोः षट्पदिका गायान्त्या रमितकाननम् ॥ १ ॥

इति श्री नित्यानन्दनाथविरचिता गुरुषट्पदिका समाप्ता ।

भाषा टीका । हे मनुष्य ! गुरुके चरणका शरण ले । अर्थात्

विचार तो कर । उसके न जाननेसे अनेक भ्रमको तू प्राप्त होता है तो तू एक गुरु बनाले ! हे मनुष्य० ॥ ३ ॥

जो तू परम पद पाना चाहता है, तू उस (परम पद पाने) में आदि कारण गुरुको सेव। उसके बाद हमेशः सुख भोगना,क्योंकि कारण विना कार्य नहीं होता ॥ हे मनुष्य० ॥ ४ ॥

जो सरल मार्ग बना देता है, उसही जरिये ग्रन्थ गुथीतेसें पढ़े जाते हैं, यहां पर गुरु उस एक अक्षरको देता है जोकि तेरे अक्षर (मोक्ष) सिद्ध होता है । हे मनुष्य० ॥ ५ ॥

जो इस लोकमें उसको नहीं सेवते हैं, वे व्याकु अत्यन्त यमलोकको सेवते हैं, जो तेरे नित्यानन्द (मोक्ष) प्यारा है तो मेरी वाणी रूप मालाको अपने शिरपर धारण कर । हे मनुष्य ! तू गुरुके चरणका शरण कर० ॥ ६ ॥

नित्यानन्दसे बनाई गई, और बुधमलजीसे[१] गवाई गई वो यह गुरुषट्पदी रसिक पुरुषोंके मुंहपर शोभित होवो ॥ १ ॥

—•—

॥ अथ श्री सूरिपदलाभोत्सव वर्णनम् ॥

मत्तमयूरवृत्तम् ।

आर्यावर्त्तं न्ते मरुभूमेः सुमनोज्ञ–
रम्यागारं मद्धिरणीकं मुनिपद्मम् ।

१ ये गायनमहाशय जयपुरमहाराजाश्रित हाकमा भासोपा हैं, और हमारे प्रिय मित्र हैं और ये सुप्रसिद्ध घटिकायन्त्रशोधक (Watch Maker) भी हैं ।

निम्बस्तम्बाऽलक्ष्यलसन्मत्तमयूरं
श्रीरोह्याः सं-भाति मुखं श्रीशिवगञ्जम् ॥१॥

भा. टी. । हिन्दुस्थानमें मारवाडके अखीरमें, सिरोहीराज्य, मनोहर गल्ली और मकानवाला, अच्छे बाजार और दूकानवाला, निम्बके पत्तोंके गुच्छोंमें नहीं मालुम होने हुए है रमण करते हुए उन्मत्त मयूर जिसमें ऐसा श्रीशिवगंज नामक नगर है ॥ १ ॥

गीतिवृत्तम् ।

गुर्जरदेशीयानां पुरुषाणामपि मरुस्थलीयानाम् ।
मध्यस्थितेरतितरां सुलभतया प्रीतिहेतुकतया च॥२॥
तत्र पुरे सम्प्राप्त-स्थितिविदुषीश्रीमालिपुष्पचन्द्रस्य ।
तनयो हि दीपचन्द्रो मुख्यतयाऽमुं महोत्सवं चक्रे॥
युग्मम् ॥ ३ ॥

मध्य होनेके कारण गुजराती और मारवाडी लोकोंके अत्यन्त सुलभ होनेसे, और प्रीतिके कारण होनेसे उस (शिवगंज) नगरमें रहनेवाले वैश्य श्रीमाली फूलचंदजीके पुत्र सेठ दीपचंदजीने मुख्यपनेसे इस महोत्सवको किया ॥ २ ॥ ३ ॥

शालिनीवृत्तम् ।

तत्रोद्देशे पश्चिमेऽदूषितेऽपि
दृष्ट्या मेऽभूत् सत्सभामण्डपोऽभ्र ।

यश्चेष्टाभिः सत्पताकाङ्गुलीनां
देवद्वन्द्वान्याह्वयन्सन्विरेजे ॥ ४ ॥

उस नगरमें पश्चिमकी तर्फ अद्भुत कपड़ेका बना हुआ ऊंचा सभामंडप था। जोकि पताका रूप अंगुलियोंकी चेष्टाओंसे मानो देव और देवियोंको बुलाता हुआ सोहता था ॥ ४ ॥

वसन्ततिलकं वृत्तम्।

धत्तेऽन्तरात्मनि जिनेशपदाम्बुजं यः
सम्यक्त्वमत्रलभते स हि शीघ्रमेव।
इत्यादिशन्निव निजान्तरधारितार्हन्
सम्यक्त्व मुत्तममहो विधरन्य आभात् ॥ ५ ॥

"जोकि अपने अन्तःकरणमें जिनेन्द्रके चरणकमलको धारण करता है वह यहां जल्दी ही सम्यक्त्वको पा लेता है" इस बातका उपदेश देता हुआ ही मानो जो (सभामंडप) जिनेन्द्रको अपने अन्दर धारण करके उत्तम सम्यक्त (अच्छे पने) से युक्त शोभित हो रहा था ॥ ५ ॥

आरभ्य राधसितपक्षत उत्सवोऽयं
रात्रीश्वरेण मह हन्त सहोदितेन।
वृद्धिं दधत्प्रतिदिनं सुतरां रराज
युक्तैव सार्द्धमुदितस्य हि सार्द्धमेधा ॥ ६ ॥

यह उत्सव वैशाख शुक्ल पक्षसेही लेकर अपने साथ उदय पाये चन्द्रमाके साथ हमेशः वृद्धि पाता हुआ सोहता था। अर्थात्

मनोहर रचनावाला प्रभुत पानका अनुकरण करने वाला, कुम्भका आदि कारण उस वक्त गाता हुआ ॥ १२ ॥

श्रीँगणगस्थितिपाली सुवेशशालीह समदोलाली ।
मध्याह्निककरताली–ध्वनिर्ननर्त्तोऽज्जगौ च गातृगणः ॥१३॥

यहां पर अच्छे वेश वाले, बराबर पांव उठाने वाले, दोपहरके वक्त ताली मारने वाले आंगणमें रहने वाले गायक गणने नृत्य किया और गाया ॥ १३ ॥

वैशाखे सितपक्षे द्वादश्युत्तरगतत्रयोदश्याम् ।
बुधवारे सुमुहूर्त्ते ऽनुमितैः साष्टाष्टि वादने प्रातः॥ १४॥
पं. न्यासक हितविजय प्रगद्यमानोचितक्रियापाठम् ।
श्रीभ्रातृचन्द्रमुनये प्रीत्या प्राचीनशुद्धरीत्या च ॥१५॥
सूरिपदं मोदपदं प्रददौ श्रीसंघसंहतिः सुतराम् ।
अन्तरमान्तीं च मुदं तदोज्जगार ध्वनिच्छलाल्लोकः ॥
तिलकम् ॥ १६ ॥

वैशाख शुक्ल १२ के ऊपरकी १३ के दिन बुधवारको अच्छे मुहूर्त्तमें प्रातःकाल अनुमानसे ८॥ बजे, पं. न्यासजीश्रीमुनिहितविजयजी महाराजके उचित क्रिया पाठके बोलने पर मुनिराजश्री भ्रातृचन्द्रजी महाराजके लिये श्रीसंघ समुदायने प्राचीन रीतिसे हर्षके स्थानभूत आचार्य पद दिया । उस वक्त लोकोंने अन्दर नहीं माते हुए हर्षको (जय) शब्दके मिषसे उगाला ॥१४॥१५॥१६॥

उद्गीतिवृत्तम् ।

मङ्गलचूर्णं तूर्णं परिपूर्णं चिक्षिपे लोकैः ।

जिनशासनस्य जगदे जयस्तदा भ्रातृचन्द्रसूरेश्च ॥१७॥

लोकोंने जल्दी परिपूर्ण वासक्षेप फेंका, और जिनशासनका जय तथा श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीका जय कहा ॥ १७ ॥

अनुष्टुब्वृत्तम् ।

तत्काले मुक्तलक्लो लोकैः संकलितः कलः ।
व्यानशे सकला आशाः सह मङ्गलपांसुना ॥ १८ ॥
निर्मूर्द्धन्यम् ।

उस वक्त लोकोंसे किया हुआ, मधुर हर्षका कोलाहल, वासक्षेपके साथ सब दिशाओंमें फैला ॥ इस श्लोकमें मूर्द्धा स्थानके अक्षर नहीं हैं ॥ १८ ॥

तदा सिंहासनगतः साधुः प्राप्तमहापदः ।
पूर्वगोत्रोद्गतो ग्लौर्वा बभौ भ्रातृकृपाकरः ॥ १९ ॥
निस्तालव्यम् ॥

उस वक्त सिंहासन पर बैठे हुए, बड़े (सूरि) पदको पाए हुए मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्रजी महाराज पूर्वपर्वत पर उगे हुए चन्द्रमाके जैसे शोभित हुए ॥ इस श्लोकमें तालुस्थानीय अक्षर नहीं है ॥ १९ ॥

मालिनीवृत्तम् ।

हितविजयगणीन्द्राद्यास्तदा नेमुरार्या—

१ साधव । सर्वत्र मुख्यतया पुरुषेन निर्देशस्तत्र स्त्रियोऽप्यूह्या ।

स्तदनु मविधि शिष्याः पूर्णचन्द्रादयस्तम् ।
नृपसुतपदि-देवेन्दु-ज्ञ-कल्याणचन्द्रा—
दिकयतय इनोऽन्ते श्रावका दीपकाद्याः ॥ २० ॥

उस वक्त पं. न्यास हितविजयजी गणी आदि साधु, उनके बाद पूर्णचन्द्रजी आदि शिष्य, महाराजकुमार श्रीदेवचन्द्रजी, कल्याणचन्द्रजी आदि यति, और इनके बाद दीपचन्द्रजी आदि श्रावक उन सूरीश्वरजी महाराजको वन्दन करते भये ॥ २० ॥

उपगीति वृत्तम् ।

विक्रमपुरजवहादुर-मल्लादिश्रेष्ठिनो मोदात्।
व्यभजन्सुमोदकानि प्रभावनायां ततोऽनुगृहम् ॥ २१ ॥

बीकानेरके सेठ बहादुरमलजी रामपुरिया आदि बड़े २ सेठोंने हर्षसे प्रभावनामें लड्डू बाँटे, और फिर प्रत्येक घरमें भी लड्डू बाँटे ॥ २१ ॥

उपजाति वृत्तम् ।

प्रभावनायां शुभभावनायां सुनालिकेराणि मनोहराणि।
हृन्मोदकान्यत्र च मोदकानि विभेजिरे ऽन्ये ऽपि च मेजिरे शंम् ॥ २२ ॥

औरोंनेभी अच्छी भावनावाली प्रभावनामें मनोहर नारियल, मनको खुश करने वाले लड्डू आदि बाँटे. और कल्याण पाया॥२२॥

दाधीचेनाशुकविना नित्यानन्देन शास्त्रिणा ।
एतत्कृतं सूरिपद-लाभोत्सवविवर्णनम् ॥ २३ ॥

इतिश्रीजोधपुरस्थदाधीच-कासल्योपाख्य-धीरधुरीण-माधवसुनाऽऽशुकवि पं. नित्यानन्दकृता सूरिपदलाभप्रशस्तिः समाप्ता ॥

दाधीच आशुकवि पं. नित्यानन्द शास्त्री ने यह सूरिपद लाभोत्सव वर्णन किया ॥ २३ ॥

इतिश्री पं. भगवतीलाल-विद्याभूषण रचिता भाषाटीका समाप्ता ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

श्रीसरस्वती स्तवः ।

पञ्चचामरं वृत्तम् ।

यदीयसत्कृतिक्रमेण संजितो नदन्कलं
मनोऽवधाननोऽनुनोलयन्स्वनं हि मेखलम् ।
प्रयात्यधः मितच्छंदो विभाव्य नैजमङ्गलं
श्रयामि तन्सरस्वतीपदाम्बुजन्मयामलम् ॥ १ ॥
स्वैमावहन्पितामहोऽपि देवगजसंघलं
विशुद्धमानसोरुभक्तियोगतो ह्यवांऽन्लम् ।

---

१ एष स्तवः सर्वोपयोगित्वाऽत्र प्रकाशितः । २ काञ्चीस्वनम् । ३ हंस । ४ पादाब्जयुगम् । ५ (देवगजसंघस्य सम्मुरायथ्र्त) स्वमानमानम् । ६ (मलमप्यर्थं । अघनतः ।

श्रुतिप्रशीलनाविधौ यदस्तवीदचञ्चलं
स्तवीमि तत्सरस्वती० ॥ २ ॥

यदीर्ष्ययेव कण्टकान्वितं सरोजमुच्छल-
न्निलीनभृङ्गमण्डलीविदष्टमादधज्जलम् ।
मधुच्छलेन मुञ्चतेऽश्रु भुक्तझञ्झलञ्झलं
दधामि तत्सर० ॥ ३ ॥

भृतिं सुधोक्तुमीश्वरं तथा यथा डुधाञलं
मनोहरं यदुल्लसत्सरोजकान्तिपाटलम् ।
सुरक्तमादधाति भक्तमात्मकीर्तिपाठलं
सुदीव्यतत्सर०॥ ४॥

विवाद आदधत्स्वलेखनीं मनोपिमण्डलं
यथा बलो महाबलो रणे हि मल्लराड् ढलम् ।
यदन्तरे स्मरत्यहो सुनूपुराऽनुरागेलं
वृणोमि तत्सर० ॥ ५ ॥

भृशं निजानतोत्तमाङ्गसंगताऽचलातलं
श्रुताम्बुधिं महागुरुं स्वकीयशिष्ययूथलम् ।

---

७ मुक्ताऽनुभूता झलञ्झला करिकर्णास्फालो येन तत्सरोजम् ।
८ (यथा डुधाञ् तथा भृति धारणं पोषं च योक्तुमीश्वरं समर्थं यत् ।
९. स्वकीर्तिपाठप्रशस्तम् * स्तुहि । १० ढलं सीरम् । ११ नूपुरशब्द
वत् ।

विबोधपद्मभीप्सितं यदुज्झिताब्जिनीदलं
नुवामि त्सर० ॥ ६ ॥

नम सुरासुरोत्तमाङ्गमाल्यपुष्पगन्धलं
सदाऽविवेकदारुनिचयप्रदाहकाऽनलम् ।
मनोव्यथाविभञ्जनं प्रतिलसत्पलं पलं
व्यनज्मि तत्सर० ॥ ७ ॥

दिशन्मनोहरं सुबोधमेदिनीरुहः फलं
विनादकाल आत्तभक्तये ददन्महाबलम् ।
सुखप्रदानकारणं सुखान्निभागदम्भलं
मनुष्व तत्सर० ॥ ८ ॥

प्रणामभाजनं सतां प्रमोदकं महाऽमलं
सदाऽविवेकसत्तमोविनाशनाय वायंलम् ।
नखेन्दुमण्डलं विभाति यत्र कान्तिमारलं
पुनातु तत्सर० ॥ ९ ॥

निषेवनेऽत्र यो नु मां निजान्तगम्मनोल्ल-
त्रिवापयामि तस्य मा रमालये शुचाऽहम् ।

१२ निर्वाणम् । १३ प मल समयम ।
१४ निवास कराम । १५ ममागृद ।

श्रीभ्रातृचन्द्रान्न बिभेति भाकैरः ॥ ५ ॥

तृप्यन्ति संपूर्णकलाधरस्य
करप्रसारातिमनोहरस्य ।
सुधीचकोरा अमृतैर्वरस्य
श्रीभ्रातृचन्द्रस्य वचोभिरस्य ॥ ६ ॥

उच्छ्रसमुच्चैर्जगतो निरन्तरं
यः सागरस्याऽपि करोति भूरिशः ।
सत्कौमुदीभावनभूषिते प्रिये
श्रीभ्रातृचन्द्रेऽत्र रुचिः प्रवर्त्ततामू ॥ ७ ॥

भूरिशास्त्रमहासमुद्रससारमन्थनमन्दर !
काममत्तगजावमूलनकेसरिन् ! गुणमन्दिर !
भ्रातृचन्द्र ! सुचन्द्रकीर्त्तिवितान ! साधुशिरोमणे!
चन्द्रगौर! जिनाङ्घ्रिपङ्कज! भृङ्गानन्द सुखप्रद!॥८॥

श्रीमद्भगवतीलाल-विद्याभूषणसेविना ।
रचितः प्रमदोद्गारो नित्यानन्देन शास्त्रिणा ॥९॥

इतिश्रीनित्यानन्दशास्त्रिरचितःप्रमोदोद्गारः समाप्त

इति शम् ॥

---

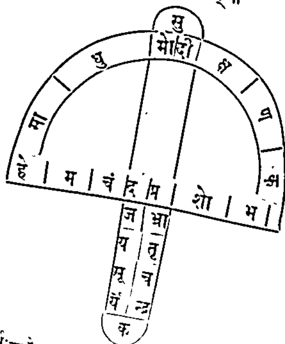
१ भ्रातृरूपात् । २ शोभाकर. ३ 'जगच्चन्द्र' इति शिष्यनामाऽपि. ४ 'सागरचन्द्र' इति शिष्यनामापि ५ सिद्धान्तकौमुद्यपि. ६ हरनर्त्तन वृत्तम् ॥

॥ छत्रनिवेदनम् ॥

॥ अनुष्टुप्वृत्तम् ॥

हे साधुमोदीक्षणक हेमचंद्र प्रशोभक ।
सुमोद जय सूर्येक सुदीप्र भ्रातृचन्द्रक ॥ १ ॥

॥ छत्रबन्धचित्रम् ॥



अर्थः—हे साधुओंके आनन्ददायक नेत्रवाले ! सुवर्ण, चन्द्रके जैसी शोभावाले, अच्छे रंगवाले, तेजस्वी, आचार्यों मुख्य ! श्रीभ्रातृचन्द्रजी ! आपकी जय हो ॥ १ ॥

सद्गुरुस्तुति ॥



श्रीपार्श्वजिणंद प्रणाम करी । श्रीगुरुगुण गाशुं
हर्ष धरी ॥ गुरु सूरि शिरोमणी सुखकारी
जिनशासनमां मंगलकारी ॥ १ ॥

बालकपणथी गुरु ब्रह्मचारी । महाव्रतधारि भवि
उपकारी ॥ जंगमतीरथ वर जयकारी
गुरु भ्रातृचंद्र शुद्धाचारी ॥ २ ॥

आगम ग्रन्थोना भंडारी । समतासागर
महासुविचारी ॥ श्रीसहजकलानिधि गुणवंता
जस नाम सुणी हरखे संता ॥ ३ ॥

सांप्रत कालें गुरुजी दीपे । महा सौम्य गुणे
शशिने जीपे ॥ सहु भट्टारक मांहि शिरोमणी
गुरु सिध्दानमहरनभोमणी ॥ ४ ॥

गुरु कंद मदन हरावे छे । गुरु ज्ञाने शंभु
नमावे छे । गुरु वाचिजापक पद पावो
गुरु भविजनना मनमां भावो ॥ ५ ॥

गुरु गुरुतर करद मन देने । गुरु विना भविजन

उपदेशे ॥ श्वेतांबर वेशे गुरुजी दीसे
गुरु गुणगण छे विश्वा वीशे ॥ ६ ॥
अहोनिश श्रीगुरुजीने भजिये। तो भवना भयने
दूर तजिये ॥ गुरु नामे दुःखउदधि तरिये
गुरु नामे जय मंगल वरिये ॥ ७ ॥
गुरु नामे नवनिधि अड सिद्धि। गुरु नामथी
ज्ञानादिक वृद्धि ॥ मनवंछित धर्मारथ शुद्धि
गुरु नामे मले शाश्वत ऋद्धि ॥ ८ ॥
गुरु नामे संतति सुखदाई। गुरु नामे लच्छि
आवे धाई ॥
गुरु नामनी महिमा बहु भाई
गुरु नामे टले मति दुखदाई ॥ ९ ॥
भवि ध्यान विषे गुरुने ध्यावो। वंछित दायक
घटमां लावो ॥ मुनि सागरचंद्र कहे गावो
गुरु गुण गातां शिव सुख पावो ॥ १० ॥
जैनाचार्यो ऽर्धविस्वामी भ्रातृचन्द्रो जगद्गुरुः ॥
इत्थं स्तुतो मुनि श्रेष्ठो विक्रमाख्ये पुरे ऽर्चिना ॥१॥
इतिश्री सद्गुरुस्तुतिभगवन्त समाप्त ।

। अथश्री सद्गुरु स्तवन । प्रथम जिणेसर प्रणमीये, ए देशी. ।

प्रेमे प्रणमुं प्रह समे, श्रीसद्गुरुजीना पाय;
भ्रातृचन्द्रसूरिराजनां चरणो वांदतां पातिक दूर
पलाय प्रेमे० ॥ १ ॥
युगप्राधान्य योगीश्वरु, सांप्रतमां मुनिराज ॥
श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपगच्छमां, दीपे राजाधिराज ॥
प्रेमे० ॥ २ ॥
भव्याकृति अति शान्तता, स्वस्वभावमां लीन ॥
परपरिणति परभाव परांमुख गुरु तणा,
भवि थाओ चरणे आधीन ॥ प्रेमे० ॥ ३ ॥
सूरि गुणो सह शोभता, भविचकोरमनचंद्र ॥
विद्यान्यायसमुद्र गुरु गुण प्रेमथी
गाओ सागरचंद्र ॥ प्रेमे० ॥ ४ ॥

इतिश्री स्तवनम् ॥

(मारुं मारुंरे सूरत शहेर—ए देशी.)

शोभा शी वर्णवुं आज धन्य दिन धन्य घडी,
गुरु भ्रातृचंद्र सुपसाय वरसे आनंद झडी.
ध्वजा पताका तोरण बावटा,
गेबी नाद संभळायरे;

मंगल वाजां वागी रह्यां ज्यां,
मानुनी मंगल गाय. धन्य. शोभा.
संवत ओगणीसे अडसठ शुदी,
तेरस वैशाख मासरे;
सूरीपदवी गुरु भ्रातृचंद्रे मही,
वाध्यो ह्रदय हुल्लास. धन्य. शोभा. २
वृद्ध बाल नरनारी सर्वने,
हैडे हर्ष न मायरे;
आनंददायक अधिक आजनो,
दिवस कदी न भुलाय. धन्य. शोभा. ३
पंचम आरे सद्गुरु आवा,
मलतां लागे वाररे;
पूरण पुन्यथी मलिया याकी,
वंदीना वे वार. धन्य. शोभा. ४
सैनप विण कदि सैन्य न शोभे.
शिखर वगर मंदिररे:
दया विनानो धर्म न शोभे.
जीव विनानुं शरीर. धन्य. शोभा. ५

ढोल निशान मृदंग झांझ वली,
झालरो झणणण थायरे;
पन्यास श्री हेतविजयजी हाथे,
सूरीपद किरिया कराय. धन्य. शोभा. ६
क्रिया तणो किल्लो करी लीधो,
ज्ञान तणा दरवाजारे;
धर्मध्वजा गगने फरकी रही,
गुरु राजाना राजा. धन्य. शोभा. ७
देश देशना संघो आवी,
उमंगे भावना भावेरे;
गर्व रहित गिरुवा गुरुना गुण,
भाईलाल मुख गावे. धन्य. शोभा. ८

श्री जैनधर्माचार्य श्रीमन् मुनिवर्य श्री १००८ भ्रातृचंद्रजी महाराजने आचार्य पद मलतां प्रांत कच्छ गाम श्रीदुर्गापुरनी पामुभाई वाघजी जैन पाठशालाना अध्यापक अमृतलाल मगनलाले प्रस्तुत महोत्सवने अंगे समर्पित कविता कुसुमांजली.

(अर्ध मनहर छंद)

उग्यो आजे आचार्योंनो भ्रातृचंद्रसूरि भानु
जयवंत जैनहीरो शोभशे रुडा संघमां,
एथी अति आनंदनो अवसर आव्यो आजे
सुणी शिवगंज स्थाने जवानुं उमंगमां;

कल्याण.

जय विश्वना पति दे शुभग उन्नति। सुरिन्द्र पद महे
छे आजभ्रातृचन्द्रजी.
महोत्सव छे आ भरतभूमिना, शिवगंज मोझार;
मुनिदर्शनने माटे मलिया, श्रावक धरीने प्यार. वि.
नागपुरि तपगच्छ पतिश्री, पार्श्वचंद्र सूरिराज;
परंपरामां हेमचंद्रसूरि, अर्पेलुं पद आज. वि.
सकल संघमां आजे आनंद, वर्ते जय जयकार;
जैनमुनिमां भ्रातृचंद्रजी, पाम्या पदवी सार. वि.
सूरिपद पाम्या एथी अधिको, आनंद पाम्यो आज;
जैनसंघमां जोत प्रकाशी, दीप्यो जैनसमाज. वि.
दीपचंद्रमुनी सुणी खबर आ, दे छे विमल वधाई;
दुर्गापुरना सकळ श्रावको, सुणी वचनो हरखाय. वि.
साधु श्रावको सर्व मळिने, पाळे आनंद आज;

पंडित वर्गो आनंद माने, गाई गुणो मुनिराज. वि.
भरतखंड छे भव्य पुरातन, जगमां उत्तम देश;
उन्नति पामे सूरि बोधर्थी, अमृत ए उद्देश. वि.

" जोयुं ज्यारथी मा मुख " ए रागनी लावणी.

आजे आनंद अपार मल्यो सकल समाज
अहा ! आनंद मन छे खरो प्रसंग. आ.
मल्या खुश खबर आज पाम्या पद मुनिराज;
मुनि भ्रातृचंद्रराज थया सूरि महाराज. आ.
शुभ शिवगंज स्थान सूरि हेमचंद्रे मान;
अर्प्युं अति सन्मान मान धारी विद्वान. आ.
सहु मुनिओनो खास आथी वध्यो छे हुलास;
करी विद्या प्रकाश पछी पामो सहु. आ.
पहोचो उन्नतिने द्वार करी द्वेषनो संहार;
पछी पडो सहु बहार पामी उत्तम पद. आ.
छे अमृत मन आ शांतिनो प्रसंग;
तजी आलस्य अंग करो देहउद्धार. आ.

छत्रीस गुणगण युक्त सूरि चरण गुणपि अलंकृ
भवि भक्तिभावे नमो निशिदिन ज्ञानचंद्र सूरि
जिन भाण अस्त थतां सूरीश्वर ज्ञान दीप
मिथ्यांधकार विकार टाळी भविक जन
शुभ छंद सांकळचंद कहे पावन करो
भवि भक्तिभावे नमो निशिदिन ज्ञानचंद्रसूरि

राग सारंग.

ओ माईवनी नेक नजर करी नाथ हमारे साथे—ए

आज आनंद भयो सूरिपद
गुरु ज्ञानचंद्रजी स्वीकारे.
पुण्य उदय भयो भेट्या सूरीश्वर
भावे दुरित निवारे. टेक
आज आनंद अमृतघन वरस्या
आज जिनशासन देखो हरख्या,
आज सूरिपद ज्ञानचंद्र करस्या. आज
श्रीनागपुरीय तपागच्छ आयु,
सुरिहीर सूरि पार्श्वचंद्र साधु,
तस पटोधर देवसूरि आर्य आज

उग्यो सोनानो सूरज आजे,
आज अमृतना घन गाजे;
आज मंगळ वाजित्रो वाजे. दिवस० १
नागपुरी वडतप गच्छ गाजे,
पाट हेमसूरिने छाजे,
आज भ्रातृचंद्रजी विराजे. दिवस० २
सुविहित निर्ग्रंथ सूरींदा,
थया पार्श्वचंद्र मनिइंदा,
कीधो किरियोद्धार सूरींदा. दिवस० ३
तस पाटे सूरि वहु त्यागी,
निर्ग्रंथ थया निरागी,
ज्ञान ध्यानथी शुभ लय लागी. दिवस० ४
पछी निज गुरु भक्ति कीधी,
छडी छत्र ने पालखी दीधी,
जगतशेठे सावाशी लीधी. दिवस० ५
आज सूरिपद निर्ग्रंथ त्यागी.
वेठा भ्रातृचंद्र वडभागी,
आज पूर्व पुण्यकृति जागी. दिवस० ६

सूरि शांत दांत गुणदरिया,
छुमशान ध्यान अनुसरिया.
छत्रीस गुणगणथी भरिया. दिवस० ७

जंगमतीरथ सुखदाना,
निष्कारण बंधु भ्राता,
भविजनने सुधर्मना दाता. दिवस० ८

समता सागरसुरराया,
नहि मोह कोह ने माया,
कंचन वरणी जस काया. दिवस० ९

गुरु धर्मधुरंधर धोरी,
निर्मंथ न पासे कोरी,
गणी दुनियां दिवानी छोरी. दिवस० १०

भवि नर नारी उद्धरजो,
सांकळचंदनां दुरितां हरजो,
सूरीश्वर भविभवभय हरजो. दिवस० ११

श्रीमान् आचार्य महाराज श्री श्री १००८ श्रीभ्रातृचंद्र सूरीश्वरजीना राजनगर प्रवेश समये गवायेलां मंगल गीत.

१

(चालो साहेली (२) भुवनेश्वरीना)—ए राग.

चालो गुरुजी चालो गुरुजी चरणकमळथी
राजनगर पावन करीए;
अति उछरंगे चढते रंगे भवसागरथी
भवि नरनारी उद्धरीए.
जनमनरंजन जिनवचनामृत
धंधुविधु मुखथी झरीए;
बोधिबीज देई भविजन मनना
त्रिविध ताप पापज हरीए,
समतासागरमांथी गुरुजी सज्ञान
मन गागर भरीए. चालो गुरुजी० १
सुविहित गुणदरियो गीतारथ
भ्रातृचंद्र सूरिराज मळ्यो;
यथा सुरतरु फळियो मरुधरमां
गुर्जरभूमीमां आज फळ्यो.

गुरु वचनामृत फळ सांकळचंद
संघ सकळ चाखे सबळो. चालो गुरुजी० २

२

(मालण गुंथी लाव गुणीयल गजरो)—ए राग.

साहेली जोवा चाल्य गुरुजी पधार्या,
जेणे राग ने द्वेष निवार्या. साहेली जोवा० १
आज भ्रातृचंद्रसूरिराया, आज राजनगरमां सुहाया;
करी सामैयुं संघे वधाव्या. साहेली जोवा० २
आज धन्य दिन धन्य घडी वेळा, महा मंगळ रेलंरेला;
थया मनवांछित गुरु मेळा. साहेली जोवा० ३
आज पूरवना पुण्य जाग्या, आज वैरी अनादिना भाग्या;
आज मे' वर्ष्या म्हो गाग्या. साहेली जोवा० ४
व्हेनी मोतीना साथिया पूरो, करी गुंहली चौगति चूरो;
गुरुभक्तिनो उग्यो अंकुरो. साहेली जोवा० ५
छत्रीस गुणगण सूरीराया, भवरणमां शीतळ छाया;
नहीं मोह कोह ने माया. साहेली जोवा० ६
गुरुगुण गंगाजळ झीली, सींचीए गुणवाडी साहेली;
वधे समकित वृक्षनी वेली. साहेली जोवा० ७
एवा शांत दांत मृगीराया. भजी पावन करीए काया;
गुण सांकळचंदे गाया. साहेली जोवा० ८

श्रीमान् आचार्य महाराज श्री श्री १००८ श्रीभ्रातृचंद्र सूरीश्वरजीना राजनगर प्रवेश समये गवायेलां मंगल गीत.

१

(चालो साहेली (२) भुवनेश्वरीना)—ए राग.

चालो गुरुजी चालो गुरुजी चरणकमळथी
राजनगर पावन करीए;
अति उछरंगे चढते रंगे भवसागरथी
भवि नरनारी उद्धरीए.
जनमनरंजन जिनवचनामृत
बंधुविधु मुखथी झरीए;
बोधिबीज देई भविजन मनना
त्रिविध ताप पापज हरीए,
समतासागरमांथी गुरुजी सज्जन
मन गागर भरीए. चालो गुरुजी० १
सुविहित गुणदरियो गीतारथ
भ्रातृचंद्र सूरिराज मळ्यो;
क्यां सुरतरु फळियो मरुधरमां
गुर्जरभूमीमां आज फळ्यो.

गुरु वचनामृत फळ सांकळचंद
संघ सकळ चाखे सवळो. चालो गुरुजी० २

२

(माथन मुंधी म्हार गुणीपन्न गजरो)—ए राग.

साहेली जोवा चाल्य गुरुजी पधार्या,
जेणे राग ने द्वेष निवार्या. साहेली जोवा० १

आज भ्रातृचंद्रसूरिराया, आज राजनगरमां सुहाया;
करी मामेयुं संघे वधाव्या. साहेली जोवा० २

आज धन्य दिन धन्य घडी वेळा, महा मंगळ रेलंरेला;
थया मनवांछित गुरु मेळा. साहेली जोवा० ३

आज पूरवना पुण्य जाग्या, आज वैरी अनादिना भाग्या;
आज मे' वर्ष्यां म्हो गाग्या. साहेली जोवा० ४

व्हेनी मोतीना साथिया पूरो, करी गुंहली चौगति चूरो;
गुरुभक्तिनो उग्यो अंकुरो. साहेली जोवा० ५

छत्रीस गुणगण सूरीराया, भवरणमां शीतळ छाया;
नहीं मोह क्रोह ने माया. साहेली जोवा० ६

गुरुगुण गंगाजळ झीली, सींचीए गुणवाडी साहेली;
वधे समकित वृक्षनी वेली. साहेली जोवा० ७

एवा शांत दांत सूरीराया, भजी पावन करीए काया;
गुण सांकळचंदे गाया. साहेली जोवा० ८

सुगुरुस्तुतिरूप " स्वागत पत्रिका. "

(वसंततिलकावृत्त)

शांती सुधाकर सदा समताविलासी।
आनंद मंगल प्रभाकर तेजराशी॥
गांभीर्य गौरव मुखेन्दु रह्या प्रकाशी।
प्रेमे पधारो गुरु आगम तत्त्वभाषी ॥१॥

वर्षावजो सु उपदेश विशुद्ध धारा।
विस्तारजो अचळ शांति सु वाणीद्वारा॥
ऊद्धारजो भविक ज्ञानप्रभाविकासी प्रेमे० ॥२॥

उडे अमीत उर आनंदना फुवारा।
पाम्या पुनीत गुरुदर्शन दिव्यमाळा॥
आ भक्त अंतर निरंतर रहो निवासी प्रेमे० ॥३॥

आ गुर्जरभुमि पवित्र करी प्रवेशो।
भेदी उंडा हृदयना तिमिर प्रदेशो॥
आनंद मंगल उषा उरमां प्रकाशी प्रेमे० ॥४॥

श्रीभ्रातृचंद्र मुखचंद्र श्री ज्ञानचंद्र।
भावे नमे भाविक भक्त चकोरवृंद॥
आ "दक्ष" अज्ञ उर ज्ञानि गुरु प्रकाशी प्रेमे० ॥५॥

भावो भावो जशोदाना कंत अम घेर आवोरे—ए राग.

आजे शांत दांत सुखदाता गुरुजी पधारेरे,
वर्षावे आनंदमेघ वाणी अमिधारेरे. आजे० १
उग्यो अविचळ आनंद भानु उर अजवाळेरे;
पधारो संत महंत श्री अम उर द्वारेरे. आजे० २
सूरीश्वर सुरतरु छांये भविजन रमतांरे;
प्रगट्युं अम पुन्य प्रभाव गुरुजीने नमतांरे.आजे० ३
धरि पंचमहाव्रत मोहरिपु संहारेरे;
शुभ पदवी धुरंधर धर्माचार्यनी धारेरे. आजे० ४
भावि अंतर कुमुदचंद्र नमे भविवृंदरे;
भवभीरु गुरु श्री सूरीश्वर भ्रातृचंद्ररे. आजे० ५
ज्योति जैनधर्मनी देश विदेश विस्तारीरे;
करे पावन राजनगर गुरु चन्द्र पधारीरे. आजे० ६
शांतिकर स्वातिमेघ गुरु अमि वाणीरे;
याचे भवि चातकवृंद सु देशनापाणीरे. आजे० ७
समतासागर गुरुराज श्री संवेग संगीरे.
विदारता कुमति कुटिल सुमति संगीरे. आजे० ८

रची काव्यना पात्रे धरि उर भावना मोतीरे;
वधावतां गुरुजी प्रगटे आनंद ज्योतिरे. आजे० ९
उद्धारजो भविजन वृंद पड्या माया फंदरे;
उतारे आरती "दास" सु आनंद छंदरे. आजे० १०

जिन राजा ताजा, मल्ली जिराजो भोयणी गाममां–ए राग.

मुनी संजम रागी, भले पधारो शुभ शहेरमां,
राजनगर आ जैन धरमनुं, शहेर वडुं शिरताज;
भ्रातृचंद्रसूरी भले पधार्या, आनंदनो दिन आजरे. मु.१
समता श्रद्धा शांति शरीरे, ममता नहीं मन दीसे;
शास्त्र सिद्धांते तत्त्व विचारी, सत्य वचन उपदेशेरे. मु.२
पंच महाव्रत गुणना दरिआ, अष्ट करम हणनारा;
उत्तम बोधी अमृत ज्ञानी, सद्गुरु अमने प्यारारे. मु.३
अधमउधारण आतमध्यानी, आतमना अलबेला;
कर जोडीने करुं वीनती, अरज स्वीकारो व्हेलारे. मु.४
राजनगरना श्रावक आवी, वीनती करी पधरावे;
महेर करीने महा मुनिराया, सभा सरस्वती गावेरे. मु.५

-:०:-

सूरीश्वर श्रीमान् भ्रातृचंद्राचार्यना पुर प्रवेश समये सामैयानुं तथा नगरना देखावनुं वर्णन.

सारुं सारुं रे सुरत शहेर मुंबाइ अलबेली.–ए राग.

दिन सफळ घडी पळ आज, गुरुजी पधार्या छे;
आज पुरप्रवेश सूरिराज, काज सुधार्या छे.—टेक.
भ्रातृचंद्र सूरिराज पधार्या, आनंद बाळगोपाळरे;
राजनगरमां आज दीवाळी, घर घर मंगळमाळ. गु. १
घर घर तोरीयांतोरण शोभे, ऊडे ध्वज आकाशरे;
विच विच मुक्ताफळनी श्रेणी, मानुं ज्योति प्रकाश.गु. २
ग्राम ग्राम मंडपनी रचना, जाणे देवविमानरे;
सामैयुं करी अति उछरंगे, संघे कर्युं सन्मान. गु. ३
वाजां वाजे अंबर गाजे, नोबत ने निशानरे;
अलबेला शाबेला हय पर, चडिया देवसमान. गु. ४
आज प्रभाते प्रभा सूरिनी, सूरयो स्पर्धा करनीरे;
चिंते भानु हुं नभवासी. आ सूर उग्यो धरनी. गु. ५
गुरुमुख जोनी वधावनी मोती. बाळा गुण मनोमालारे;
माजन महाजन चान्हे गाये. मंगळ बोले बाळ. गु. ६
राजहंस सूरीश्वर अप्रमत्त. ज्ञान ध्यानमां मग्न छेर;
उपयोगे पदकजथी भूतळ, पावन करता थाय

राजमार्ग संकिर्ण थया बहु, मळ्या लोकना थोकरे;
गुरुमुख जोवा जन वेइ चढिया, माळ अटारी गोख. गु.
आज महोदय सफळ मनोरथ, पुरवनां पुण्य जाग्यांरे;
शामळानी पोळे गुरु आव्या, पापमेवाशी भाग्या. गु.९
तत्ववीणा गुणज्ञाननी वागी, भारतभूमि निरधाररे;
शांत सुधारस धर्मदेशना, सुणे भविक नरनार. गु. १०
गुरुगुण गंगाजळने झीली, सींचो भवि गुणवाडी रे;
अनुभव पुष्प खिले उर जामे, समकित सुर तरु दाडी. गु. ११
मुकुटमणी श्री संघ तिलक गुरु, सभा सरस्वती ताजरे;
संघ समुद्रमां संपनी भरती, भरव्यो कलानिधि आज. गु. १२
विनय विवेक ने विद्या वधशे, श्रद्धा ने समकीतरे;
क्लेश कुसंप जशे जड मूळथी, जशे रोग इन भीत. गु. १३
सद्गुरुराज प्रभावे थाशे, संघमां मङ्गळमाळरे;
संघ जंप स्मृद्धि सांकळचंद, थाशे लीला विशाळ. गु. १४

भ्राजिष्णुं भविनां हिताय भुवने नित्यं चरिष्णुं मुदा
तृष्णातीत विनीत वीत विविध क्लेशं जयिष्णुं भृशम्।
चंद्राभोज्ज्वल विशदं यतिवरं सद्बोध दिष्णुत्तमं
दृश्यं नितरां प्रशान्तमनवं श्रीभ्रातृचन्द्रं भजे ॥